IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# जयशंकर प्रसाद के काव्य में मानवीय जीवन–मूल्यों का अध्ययन

शोधार्थी – रौनक टाक

संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा।

शोध निदंशक– डॉ. निमला राव (हिन्दी विभाग),

संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा।

शोध सारांश :– जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि, नाटककार एवं चिंतक थे। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदनाओं तथा जीवन–दर्शन का उत्कृष्ट समन्वय देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्रसादजी के काव्य में निहित मानवीय जीवन–मूल्यों का विश्लेषण करना है। उनके काव्य–साहित्य में प्रेम, करुणा, त्याग, सहिष्णुता, आत्मविश्वास, मानवता, राष्ट्रप्रेम तथा विश्वबंधुत्व जैसे उच्च जीवन–मूल्यों का व्यापक चित्रण मिलता है।

प्रसादजी ने मनुष्य को सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी मानते हुए उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल दिया है। उनकी प्रसिद्ध कृति कामायनी में मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव जीवन के विभिन्न पक्षों तथा आदर्श मूल्यों को अभिव्यक्त किया गया है। श्रद्धा प्रेम, विश्वास और करुणा का प्रतीक है, जबकि इड़ा बुद्धि एवं तर्कशीलता का प्रतिनिधित्व करती है। इन दोनों के समन्वय से संतुलित एवं आदर्श मानव जीवन की स्थापना का संदेश दिया गया है। प्रसाद के काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण अत्यंत प्रबल है। वे व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य, नैतिकता तथा सांस्कृतिक चेतना को महत्वपूर्ण मानते हैं। उनके काव्य में निहित जीवन–मूल्य आज के भौतिकवादी एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में भी प्रासंगिक हैं तथा मानव समाज को नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।

मूलाक्षर :– मानवता एवं विश्वबंधुत्व का मूल्य, प्रेम, करुणा एवं सहानुभूति का मूल्य, नारी सम्मान एवं नारी चेतना, कर्म, पुरुषार्थ एवं नैतिकता, राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्य।

प्रस्तावना :– हिंदी साहित्य के इतिहास में जयशंकर प्रसाद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। वे छायावाद युग के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से हिंदी काव्य को नई दिशा एवं गहराई प्रदान की। प्रसाद केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि नाटककार, कथाकार तथा चिंतक भी थे। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, दर्शन, इतिहास तथा मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उनके काव्य का मूल उद्देश्य मानव जीवन की श्रेष्ठता, उसकी गरिमा तथा उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को प्रतिष्ठित करना रहा है।

मानवीय जीवन–मूल्य किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला होते हं। ये मूल्य मनुष्य के आचरण, विचार, व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों को दिशा प्रदान करते हैं। प्रेम, करुणा, सहानुभूति, त्याग, सेवा, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, नैतिकता एवं विश्वबंधुत्व जैसे मूल्य मानव जीवन को सार्थक एवं आदर्श बनाते हैं। आधुनिक युग में भौतिकवाद, उपभोक्तावाद तथा नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण मानव समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में जयशंकर प्रसाद के काव्य में निहित मानवीय जीवन–मूल्य विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठते हैं।

प्रसादजी के काव्य में मानव जीवन के विविध पक्षों का सूक्ष्म एवं संवेदनशील चित्रण मिलता है। उनकी अमर कृति कामायनी मानव जीवन की जटिलताओं, संघर्षों तथा आदर्शों का दार्शनिक आख्यान है। इसके अतिरिक्त आँसू, लहर तथा झरना जैसे काव्य–संग्रहों में भी मानवीय भावनाओं, सामाजिक चेतना तथा नैतिक आदर्शों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। उनके काव्य में व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य, मानवता के प्रति आस्था तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का संदेश निहित है।

मानवता एवं विश्वबंधुत्व का मूल्य :–

जयशंकर प्रसाद के काव्य में मानवता एवं विश्वबंधुत्व की भावना अत्यंत व्यापक एवं उदात्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। वे मानव जीवन को सर्वोच्च मानते हैं तथा मनुष्य के सर्वांगीण विकास और कल्याण को साहित्य का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। उनके काव्य में संकीर्ण जातीय, धार्मिक एवं सामाजिक भेदभावों का विरोध तथा समस्त मानव जाति के प्रति प्रेम, करुणा और सहानुभूति का संदेश मिलता है। प्रसाद का मानवतावाद भारतीय सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित है, जिसमें समस्त विश्व को एक परिवार मानने की भावना निहित है।

प्रसादजी ने अपने काव्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि मानवता का वास्तविक स्वरूप प्रेम, सहयोग, सह–अस्तित्व और परस्पर सम्मान में निहित है। वे मनुष्य को जाति, धर्म, भाषा, वर्ग एवं क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर देखने की प्रेरणा देते हैं। उनके अनुसार मानव जीवन की सार्थकता तभी संभव है जब व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और विश्व के कल्याण के लिए कार्य करे। यही भावना विश्वबंधुत्व का आधार बनती है।

प्रसादजो की अमर कृति कामायनी में मानवता और विश्वबंधुत्व का आदर्श अत्यंत प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत हुआ है। कामायनी के पात्र श्रद्धा और मनु मानव जीवन में प्रेम, विश्वास, करुणा तथा समन्वय के महत्व को स्थापित करते हैं। श्रद्धा मानव हृदय की संवेदनशीलता और मानवता की प्रतीक है, जो मनुष्य को समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति का संदेश देती है। प्रसाद ने यह दिखाया है कि केवल बुद्धि या शक्ति के आधार पर आदर्श समाज का निर्माण नहीं हो सकता, बल्कि उसके लिए मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है।

प्रसादजी के काव्य में विश्वबंधुत्व की भावना भारतीय संस्कृति के "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्श से जुड़ी हुई है। वे ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहाँ सभी मनुष्य समानता, प्रेम और भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करें। उनके काव्य में किसी प्रकार के भेदभाव, घृणा या संघर्ष के लिए स्थान नहों है। इस प्रकार जयशंकर प्रसाद का काव्य मानवता, समरसता और विश्वबंधुत्व के उच्च आदर्शों को स्थापित करता है तथा आधुनिक समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

प्रेम, करुणा एवं सहानुभूति का मूल्य :–

जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रेम, करुणा एवं सहानुभूति जैसे मानवीय जीवन–मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने प्रेम को मानव जीवन की मूल शक्ति तथा समाज के विकास का आधार माना है। उनके अनुसार प्रेम केवल स्त्री–पुरुष के मध्य आकर्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समस्त मानव जाति के प्रति अपनत्व, सद्भाव और आत्मीयता की भावना है। प्रसादजी के काव्य में प्रेम मानव हृदय की पवित्रतम अनुभूति के रूप में चित्रित हुआ है, जो व्यक्ति को स्वार्थ, अहंकार और संकीर्णताओं से मुक्त कर व्यापक मानवता की ओर अग्रसर करता है।

प्रसादजी की रचनाओं में करुणा और दया का भाव भी अत्यंत प्रभावशाली रूप से व्यक्त हुआ है। वे मानव जीवन में संवेदनशीलता को आवश्यक मानते हैं तथा दुःखी, पीड़ित और असहाय व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति रखने की प्रेरणा देते हैं। उनके काव्य में करुणा केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व का प्रतीक भी है। वे मानते हं कि जिस समाज में करुणा और दया का अभाव होता है, वहाँ मानवीय संबंध कमजोर पड़ जाते हैं और सामाजिक समरसता समाप्त होने लगती है।

उनकी महान काव्यकृति कामायनी में प्रेम, करुणा और सहानुभूति के मूल्यों का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। श्रद्धा का चरित्र प्रेम, ममता, त्याग और करुणा का प्रतीक है। वह मनु को केवल जीवन का सहारा ही नहीं देती, बल्कि उसे मानवता,

संवेदनशीलता और आत्मिक संतुलन का मार्ग भी दिखाती है। श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद यह संदेश देते हैं कि जीवन में प्रेम और करुणा के बिना वास्तविक सुख एवं शांति की प्राप्ति संभव नहीं है।

प्रसादजी के काव्य में मानवीय संबंधों की गरिमा और संवेदनशीलता को विशेष महत्व दिया गया है। वे व्यक्ति को दूसरों के दुःख–सुख में सहभागी बनने तथा परस्पर सहयोग एवं सहानुभूति की भावना विकसित करने की प्रेरणा देते हैं। उनके अनुसार सहानुभूति मानव संबंधों को मजबूत बनाती है और समाज में सौहार्द तथा एकता स्थापित करती है। इस प्रकार जयशंकर प्रसाद का काव्य प्रेम, करुणा एवं सहानुभूति जैसे जीवन–मूल्यों का सशक्त संवाहक है। उनकी काव्य–दृष्टि मानव हृदय को उदार, संवेदनशील एवं मानवीय बनाने की प्रेरणा देती है तथा वर्तमान समय में भी इन मूल्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित करती है।

नारी सम्मान एवं नारी चेतना :–

जयशंकर प्रसाद के काव्य में नारी सम्मान एवं नारी चेतना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने नारी को केवल सौंदर्य या आकर्षण की वस्तु के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे जीवन की प्रेरक शक्ति, संस्कृति की संवाहक तथा मानव सभ्यता के विकास की आधारशिला माना है। प्रसाद की दृष्टि में नारी श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, करुणा, त्याग और सहनशीलता का मूर्त रूप है। उनके साहित्य में नारी के प्रति गहरा सम्मान और आदरभाव दिखाई देता है, जो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ उनकी प्रगतिशील सोच को भी व्यक्त करता है।

प्रसादजी की प्रसिद्ध कृति कामायनी में नारी के आदर्श स्वरूप का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। श्रद्धा का चरित्र नारी की महानता, ममता, प्रेम और त्याग का प्रतीक है। श्रद्धा मनु के जीवन में आशा, विश्वास और संतुलन का संचार करती है। वह केवल एक पात्र नहीं, बल्कि मानव जीवन के उन उच्च मूल्यों की प्रतिनिधि है, जिनके बिना जीवन अधूरा और दिशाहीन हो जाता है। श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद ने यह स्थापित किया है कि नारी समाज और परिवार की आधारशिला है तथा उसके बिना मानव जीवन की पूर्णता संभव नहीं है।

जयशंकर प्रसाद ने नारी की गरिमा और सम्मान को विशेष महत्व दिया है। उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ "नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत–नग पग–तल में" नारी के प्रति उनके सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण को स्पष्ट करती हैं। इन पंक्तियों में नारी को श्रद्धा, विश्वास और जीवन की पवित्र प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद नारी को पुरुष की सहयोगी, प्रेरणास्रोत और जीवन–संगिनी मानते हैं, न कि उसकी दासी या आश्रित।

प्रसादजी के साहित्य में नारी चेतना का स्वर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने नारी को स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं आत्मसम्मान से युक्त रूप में चित्रित किया है। उनकी रचनाओं की नारी पात्र केवल भावुक या निष्क्रिय नहीं हैं, बल्कि वे निर्णय लेने, संघर्ष करने और परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हैं। उनके नाटकों और काव्य में नारी शक्ति, साहस और आत्मविश्वास का परिचय देती है। इस प्रकार प्रसाद ने नारी को समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करते हुए उसकी बौद्धिक एवं नैतिक क्षमता को स्वीकार किया है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी प्रसादजी ने नारी के महत्व को रेखांकित किया है। उनके अनुसार नारी परिवार, समाज और संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन मं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह नई पीढ़ी को संस्कार प्रदान करती है तथा सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने में योगदान देती है। इसलिए नारी का सम्मान और उसका सशक्तिकरण किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में नारी सम्मान एवं नारी चेतना का अत्यंत सशक्त और प्रेरणादायक स्वरूप प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने नारी को श्रद्धा, विश्वास, शक्ति और संस्कृति की प्रतीक मानते हुए उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय महत्व को प्रतिष्ठित किया है। उनका यह दृष्टिकोण आज के समय में भी नारी गरिमा, समानता और सशक्तिकरण के लिए प्रेरणादायक एवं प्रासंगिक है।

कर्म, पुरुषार्थ एवं नैतिकता :–

जयशंकर प्रसाद के काव्य में कर्म, पुरुषार्थ एवं नैतिकता के जीवन–मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे भारतीय दार्शनिक परंपरा से प्रभावित होते हुए भी भाग्यवाद अथवा निष्क्रियता के समर्थक नहीं हैं। उनके साहित्य में कर्मशीलता, आत्मविश्वास, संघर्ष तथा कर्तव्यपरायणता का स्पष्ट संदेश मिलता है। प्रसाद का विश्वास इस तथ्य में है कि मनुष्य अपने पुरुषार्थ और सत्कर्मों के द्वारा अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बना सकता है। इसलिए उन्होंने भाग्य पर निर्भर रहने के स्थान पर कर्म को मानव जीवन का वास्तविक आधार माना है।

प्रसादजी की काव्य–दृष्टि में कर्म मानव जीवन की गतिशील शक्ति है। वे मानते हैं कि मनुष्य को परिस्थितियों से भयभीत होकर निष्क्रिय नहीं बैठना चाहिए, बल्कि साहस, परिश्रम और दृढ़ संकल्प के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। उनके काव्य में जीवन–संघर्ष को विकास और उन्नति का साधन माना गया है। व्यक्ति का वास्तविक व्यक्तित्व कठिन परिस्थितियों में किए गए कर्म और संघर्ष से ही निर्मित होता है।

उनकी महान कृति कामायनी में कर्मवाद का उत्कृष्ट प्रतिपादन हुआ है। प्रलय के बाद मनु जब निराशा और भ्रम की स्थिति में होते हैं, तब उन्हें पुनः कर्म और सृजन के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलती है। प्रसाद ने यह स्पष्ट किया है कि जीवन में आने वाली बाधाएँ और संकट मनुष्य की परीक्षा लेते हैं तथा कर्म और पुरुषार्थ के माध्यम से ही उनका समाधान संभव है। इस प्रकार कामायनी मानव को सक्रिय जीवन, आत्मविश्वास और सतत प्रयास का संदेश देती है।

प्रसादजी के काव्य में नैतिकता को भी अत्यंत महत्वपूर्ण जीवन–मूल्य माना गया है। उनके अनुसार मानव जीवन की सफलता केवल भौतिक उपलब्धियों में नहीं, बल्कि नैतिक आदर्शों के पालन मं निहित है। सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मसंयम और सदाचार जैसे गुण व्यक्ति के चरित्र को श्रेष्ठ बनाते हैं। वे मानते हैं कि नैतिक जीवन ही समाज में शांति, समरसता और न्याय की स्थापना कर सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रसाद ने कर्तव्यपालन को मानव जीवन का अनिवार्य धर्म माना है। व्यक्ति को अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिए। कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही समाज के विकास और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकता है।

राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्य :–

प्रसादजी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे केवल एक महान कवि ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी और राष्ट्रवादी चिंतक भी थे। उनके साहित्य में भारतीय इतिहास, संस्कृति, परंपराओं तथा राष्ट्रीय गौरव के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। प्रसाद ने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी संस्कृति, नैतिक आदर्शों और राष्ट्रीय एकता में निहित होती है।

प्रसादजी के काव्य में देशप्रेम की भावना अत्यंत प्रबल रूप से अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने भारतीय अतीत की गौरवशाली परंपराओं, वीरता, त्याग और बलिदान का स्मरण कराते हुए लोगों में राष्ट्रप्रेम का संचार किया। उनकी रचनाएँ केवल अतीत का गुणगान नहीं करतीं, बल्कि वर्तमान पीढ़ी को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध भी कराती हैं। वे मानते हैं कि प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखे तथा देश की उन्नति और विकास में सक्रिय योगदान दे।

जयशंकर प्रसाद ने सांस्कृतिक एकता को राष्ट्रीय जीवन का आधार माना है। भारत विविधताओं का देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, जातियाँ और संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। प्रसाद ने इन विविधताओं के मध्य एकता स्थापित करने पर बल दिया है। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो सभी वर्गों और समुदायों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। वे मानते हैं कि सांस्कृतिक एकता ही राष्ट्र की अखंडता और स्थिरता का आधार है।

प्रसादजी के काव्य में भारतीय परंपराओं, आदर्शों और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी विशेष महत्व है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को अपने साहित्य में प्रतिष्ठित किया है। सत्य, अहिंसा, त्याग, सहिष्णुता, करुणा और विश्वबंधुत्व जैसे आदर्शों को उन्होंने भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर माना है। उनके अनुसार आधुनिकता को अपनाते समय भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं से जुड़े रहना आवश्यक है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्यों का सशक्त और प्रेरणादायक स्वरूप प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव तथा भारतीय आदर्शों के संरक्षण को महत्वपूर्ण जीवन–मूल्यों के रूप में स्थापित किया। उनका साहित्य आज भी राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक जागरूकता और नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के उन महान रचनाकारों में हैं जिनके काव्य में मानवीय जीवन–मूल्यों का व्यापक एवं प्रभावशाली चित्रण प्राप्त होता है। उनके साहित्य में मानव जीवन की गरिमा, नैतिकता, सांस्कृतिक चेतना तथा आध्यात्मिक दृष्टि का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रसाद का काव्य केवल सौंदर्य एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानव जीवन को श्रेष्ठ और सार्थक बनाने वाले मूल्यों का सशक्त संवाहक भी है।

प्रसादजी के काव्य में मानवता एवं विश्वबंधुत्व की भावना प्रमुख रूप से विद्यमान है। उन्होंने समस्त मानव जाति को एक परिवार मानते हुए प्रेम, सहयोग और समरसता का संदेश दिया है। प्रेम, करुणा एवं सहानुभूति जैसे मूल्य उनके साहित्य की आत्मा हैं, जो मनुष्य को संवेदनशील एवं उदार बनने की प्रेरणा देते हैं। इसी प्रकार उन्होंने नारी को श्रद्धा, विश्वास और शक्ति का प्रतीक मानते हुए उसके सम्मान, गरिमा और सामाजिक महत्व को प्रतिष्ठित किया है। उनके साहित्य में नारी चेतना का स्वर आधुनिक दृष्टिकोण के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

जयशंकर प्रसाद कर्म, पुरुषार्थ एवं नैतिकता के प्रबल समर्थक हैं। उन्होंने भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद को महत्व देते हुए परिश्रम, संघर्ष, आत्मविश्वास और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश दिया है। उनके अनुसार नैतिक मूल्यों के बिना मानव जीवन और समाज का संतुलित विकास संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्यों का भी सशक्त स्वरूप दिखाई देता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक एकता तथा परंपरागत आदर्शों के संरक्षण पर विशेष बल दिया है।

कामायनी सहित उनकी अन्य काव्य कृतियों में अभिव्यक्त जीवन–मूल्य आज के भौतिकवादी एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान समाज में बढ़ती नैतिक चुनौतियों, सामाजिक विघटन तथा सांस्कृतिक संकटों के बीच प्रसाद का साहित्य मानवता, नैतिकता, प्रेम और सांस्कृतिक चेतना का मार्गदर्शन प्रदान करता है।

जयशंकर प्रसाद का काव्य मानवीय जीवन–मूल्यों का समृद्ध भंडार है। उनके साहित्य में निहित मानवता, प्रेम, नारी सम्मान, कर्मशीलता, नैतिकता, राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना जैसे मूल्य न केवल उनके युग में, बल्कि वर्तमान और भविष्य के समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जयशंकर प्रसाद – कामायनी, भारती भंडार, इलाहाबाद, 1935।

2. डॉ. कुमार विमल – जयशंकर प्रसाद और उनका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।

3. डॉ. नामवर सिंह – छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011।

4. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2004।

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2002 (संस्करण)।

6. डॉ. रामविलास शर्मा – आस्था और सौन्दर्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990।

7. डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र – जयशंकर प्रसाद रू व्यक्तित्व और कृतित्व, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2012।